**आनंद की फुलझडियाँ** **अनंत गोपाल शेवड़े**

अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों में श्री अनंत गोपाल शेवडे के प्रेरक अनुभवों से युक्त रचना है आनंद की फुलझडियाँ। स्वार्थता छोडकर दूसरों की भलाई केलिए कार्य करते समय हरेक मानव का महत्व बढ़ता है। यदि अपनी मृदुभाषा और आचरण से क्षण मात्र केलिए सुख पहुँचा सकें तो हमारा जीवन धन्य होगा। जीवन को सकारात्मक दृष्टि से देखने केलिए आगे एक निबंध......

सारांश

जीवन के प्रति साकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाले अनंत गोपाल शेवड़े के प्रेरक अनुभवों से युक्त ललित निबंध है आनंद की फुलझड़ियाँ। इसमें पाँच भिन्न-भिन्न घटनाओं से समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता हैं। स्वार्थता छोड़कर परमार्थ केलिए काम करें तो मनुष्य जीवन सार्थक होता है। मृदु शब्द एवं सभ्य आचरण से क्षण मात्र केलिए सहजीवियों को सुख पहुँचा सकें तो हमारा जीवन धन्य होगा।

जगह-जगह जो हरे-भरे वृक्ष दिखाई देते हैं, उन सबका बीज हमारे पूर्वजों ने बोया था। आगामी पीढ़ी को सुख एवं आनंद पहुँचाने इन फल-वृक्षों का बीज बोया था।

रेलगाडी में यात्रा करते वक्त लेखक ने सुंदर फूल-फलों के बीज फेंकती हुई एक संभ्रांत महिला को देखा। उसको न मालुम कि उस रास्ते से फिर गुज़रूँ या नहीं, फिरभी वह इस अवसर का उपयोग करती है। यदि इसमें से कुछ जड़ पकड़ें तो ज़रूर दूसरों केलिए उपयोगी होगा।

अमेरिका के प्रेसिडेंट बेंजामिन फ्रैंकालीन के पास सहायता माँगे आए एक गरीब विद्यार्थी को उन्होंने बीस डॉलर दिए। आश्चर्य की बात यह है कि वे डॉलर एक चेन के रूप में आज भी अमेरिका में ज़रूरतमंदों के बीच घूम रहे है।

टिकट लेनेवाले यात्रियों की उपहास के बीच लेखक ने टिकट बाबू की परेशानियों को समझकर जो मधुर बात कही, उसका गहरा प्रभाव टिकट बाबू पर पड़ा। उस सहानुभूति से उसका हृदय मोम-सा हो गया और जल्दी-जल्दी टिकट देकर भीड छाँटना शुरु किया।

लेखक बैंक में हिसाब खोलने केलिए आए थे। वहाँ की क्लर्क का लिखावट बहुत सुंदर था। लेखक खुली मन से उसकी प्रशंसा की। क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। लेखक के थोडे शब्दों से उसके जीवन में क्षणमात्र केलिए सुख पहुँचाया।

दूसरों के गुणों को पहचानकर प्रशंसा करने से एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति जागृत होती है। संबंध सुदृढ़ एवं मधुर होते हैं।

## जीवन-वृत्त पढें:-

| | |
|---|---|
| | जीवन-वृत्त |
| नाम | : अनंत गोपाल शेवडे |
| जन्म | : 1911 ईं |
| प्रमुख रचनाएँ | : निशागीत, ज्वालामुखी, मंगला |
| विशेषताएँ | : अहिंदी भाषी लेखक<br>प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य सचिव<br>जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण |
| योगदान | : हिंदी को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया |
| निधन | : 1979 ईं |

अनंत गोपाल शेवडे के बारे में एक अनुच्छेद लिखें।

अनंत गोपाल शेवडे

अहिंदी भाषी लेखक अनंत गोपाल शेवडे का जन्म 1911 ईं में हुआ। निशागीत, ज्वालामुखी, मंगला आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाले अनंत गोपाल शेवडे प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य सचिव भी थे। उन्होंने हिंदी भाषा को विश्व मंच पर
प्रतिष्ठित किया। 1979 ईं में आपका निधन हुआ।

## खंड पढ़ें और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखे।

**(1) एक बूढ़ा आदमी, जिनके बाल ................................ फल मेरे नाती-पोते खाएँगे।**

(1) बूढा आदमी क्या कर रहा था? क्यों?
बूढा आदमी आम की गुठलियाँ बोने केलिए ज़मीन खोद रहा था।

(2) बूढ़े आदमी की प्रवृत्ति देखकर नौजवान क्यों आश्चर्य हुआ?
वह आदमी उतना बूढ़ा था कि उसके बाल भी सफेद हो गए थे। नौजवान इसलिए आश्चर्य हुआ कि इतना बूढ़ा होकर वह कैसे इसके फल खा सकेंगे?

(3) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें।

**निस्वार्थ सेवा**

एक बूढ़ा आदमी आम का बीज बोते देखकर एक युवक ने पूछा कि इसके फल कब खा सकते है। बूढ़े ने तुरंत उत्तर दिया कि यह आम का पेड बनते समय उस का मीठे-मीठे फल मेरी आगामी पीढ़ी केलिए भी ज़रूर लाभदायक होंगे। शायद तुम भी खा सकते है।

## (2) **हमारे पूर्वजो की .........हो उठेगा।**

(1) हमारे पूर्वजों की मनोवृत्ति का फल क्या हैं?
जो आमराई हम जगह-जगह देखते हैं, हमारे पूर्वजों की मनोवृत्ति का फल है।

(2) हमारे पूर्वजों की कौन-सी मनोवृत्ति का फल है, जो हम जगह-जगह पर अमराई देखते हैं। कौन-सी मनोवृत्ति?

स्वार्थता को भूलकर दूसरों को सुख और आनंद मिलने की मनोवृत्ति। हमारे पूर्वजों में स्वार्थता नहीं था। वे जो कुछ करते है उन सब में एक दीर्घ-दृष्टि है। हम जगह-जगह जो बडे-बडे वृक्ष देख सकते हैं, जहाँ यात्रा के अवसर पर ज़रा आराम केलिए बैठते है, ये सब हमारे पूर्वजों के परिश्रम का फल है। अपने सुख-सुविधाओं के बारे में वे सोचते नहीं। उन्होंने जो कुछ बोया है, वह आगामी पीढी केलिए है।

(3) यदि हम लोग इस वृत्ति को हृदयंगम कर लें तो क्या हो सकेगी?
यदि हम लोग इस मनोवृत्ति को हृदयंगम कर लें तो इस दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेगी।

(4) किसमें कोई शंका नहीं है?
यदि सभी लोग अपने स्वार्थता से कुछ ऊपर उठकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने केलिए कोशिश करें तो इस दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेगी, इसमें कोई शंका नहीं है।

(5) ' हम लोग सभी यदि इस वृत्ति को हृदयंगम कर लें तो.....' कौन-सी वृत्ति?
अपने स्वार्थता से ज़रा कुछ ऊपर उठकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने की मनोवृत्ति।

(6) उस बूढ़े का आगे का जीवन केसे हो सकते हैं?
उस बूढ़े का जीवन एक परम स्वात्विक आनंद की दीप्ति से जगमगा उठा होगा और उसकी मृत्यु बहुत शांत और कष्टहीन हो सकते हैं।

(7) हमारा जीवन कैसे सच्चे सुख के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा?

यदि सभी लोग अपने स्वार्थता से कुछ ऊपर उठकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाने केलिए कोशिश करें तो इस दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेगी। इससे हमारा जीवन भी सच्चे सुख के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा।

(8) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें।

### निस्वार्थता

अपने स्वार्थ जीवन से ऊँचे उठकर दूसरों को सुख और आनंद पहुँचाएँ तो इस दुनिया में अधिक आनंद की सृष्टि हो सकेगी। हमारा जीवन भी सच्चे सुख और आनंद की दीप्ति से जगमगा उठा होगा।

## (3) एक वृद्ध ........... उपयोग कर लूँ?

(1) वृद्ध महिला क्या कर रही थी?
वृद्ध महिला रेलगाड़ी में खिड़की के पास बैठकर अपनी मुट्ठी से कुछ चीज़ बाहर फेंकती जा रही थी।

(2) रेलगाड़ी से वृद्ध महिला क्या फेंक रही थी?
सुंदर फूलों और फलों के बीज फेंक रही थी।

(3) वृद्ध महिला की उम्मीद क्या थी?
वृद्ध महिला की उम्मीद यदि कुछ बीज जड़ पकड़ लेंगे तो लोगों को फायदा होगा।

(4) यदि कुछ बीज जड़ पकड़ें तो लोगों को क्या फायदा होगा?
यदि उनमें से कुछ बीज जड़ पकड़ें तो वहाँ से आने-जाने वाले लोगों को शीतल छाया मिलेगा, मीठे फल खा सकेंगा। यदि सुदंर फूलों के बीज हैं तो उसे देखनेवालों के मन को भी खुशी होगी।

(5) इसलिए मैं इस संधि का उपयोग कर लूँ, संधि क्या है?
वृद्ध महिला को संदेह है कि वह फिर उसी रास्ते से गुज़रूँ या न गुज़रूँ। इसलिए वह अपने अवसर का उपयोग, दूसरों की भलाई केलिए उपयोग करने का निश्चय किया।

(6) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें।

**अवसर का सदुपयोग**

एक वृद्ध महिला रेलगाड़ी से सफ़र करते समय अपनी मुट्ठी से सुंदर फलों और फूलों के बीज बाहर फेंक रही है। उनकी उम्मीद यह थी कि उनमें कुछ अगर जड़ पकड़ें तो लोगों को कुछ फायदा हौगा।

## (4) आजकल .......... कर सकते हैं।

(1) दुनिया रहने लायक कैसे बने?
आज की नया पीढी सदा रुपए-पैसे के पीछे दौडती है। स्वार्थता भरी इस दुनिया में कुछ लोग ऐसे है, जो निस्वार्थ जीवन बिताते रहते है। वे परोपकारी भी है। इस प्रकार दुनिया रहने लायक बनी।

(2) हमें किसके परे रहना चाहिए?
भौतिकवाद और भोग-विलास के हाय-हाय से परे रहना चाहिए।

(3) भौतिकवाद और भोग-विलास के हाय-हाय से परे रहते हैं?
निस्वार्थ और आदर्श-प्रिय लोग।

(3) हम कब रसातल तक पहुँच गए होते?
भौतिकवाद और भोग-विलास के विरुद्ध रहनेवाले नि:स्वार्थी और आदर्श युक्त लोग न होते तो हम रसातल तक पहुँच गए होते।

(4) किसको देखकर हम मानव जाति के भविष्य पर विश्वास कर सकते हैं?
इस ज़माने के अंधकार में भी थोड़ा आनंद की फुलझड़ियों से प्रकाश फैलाते रहते हैं, जिन्हें देखकर हम मानव जाति के भविष्य पर विश्वास कर सकते हैं।

(5) खंड़ का संक्षेपण करें और उचित शीर्षक दें।

**मानव जाति के भविष्य**

नि:स्वार्थ लोगों के कारण ही दुनिया रहने लायक बनी है। ऐसे लोग के अभाव में हम रसातल तक पहुँच कर सकते हैं। अंधकार में भी आनंद फैलाने वालों पर इस दनिया और मानव जाति के भविष्य रहते है।

## (5) अमेरिका के ........ अच्छी बात हैं।

(1) बेंजमिन फ्रैंकलीन के मदद माँगने केलिए आया?
एक गरीब विद्यार्थी।

(2) बेंजमिन फ्रैंकलीन ने विद्यार्थी की मदद किया। यह प्रस्ताव सही है या गलत?
सही है।

(3) बेंजमिन फ्रैंकलीन ने गरीब विद्यार्थी की मदद कैसे की?
उन्होंने गरीब विद्यार्थी को बीस डाँलर देकर मदद की।

(4) लेकिन वह विद्यार्थी उस उपकार को न भूला। इस से विद्यार्थी के कौन-सी चरित्रगत विशेषता को व्यक्त करते हैं।

विद्यार्थी गरीब होकर भी ईमानदारी है। वर्ष कई बीत जाने पर भी वह उस उपकार को न भूला। जब अपने दिन फिरे, वह उस रकम लौटाने केलिए बेंजमिन फ्रैंकलीन के पास गया।

(5) वह बीस ड़ॉलर बेंजमिन फ्रैंकलीन ने स्वीकार नहीं किया। क्यों?
बेंजमिन फ्रैंकलीन तो विद्यार्थी को वह छोटी रकम देकर भूल गए। इसलिए वह बीस ड़ॉलर उसने स्वीकार नहीं किया।

(6) विद्यार्थी रकम लौटाने आए तो फ्रैंकलीन ने क्या कहा?
विद्यार्थी रकम लौटाने आए तो फ्रैंकलीन ने कहा, "मुझे याद तो नहीं है कि मैंने यह रकम आपको कब दी। लेकिन खैर, आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास कोई ऐसा ही ज़रूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए।"

(7) ज़रूरतमंद कौन-कौन हो सकते है?

इस स्वार्थता भरी दुनिया में कुछ लोग ऐसे है, जो अपनी बुनियादी ज़रूरतों से वंचित है। बुनियादी ज़रूरतों के अंतर्गत भोजन, वस्त्र, आवास आदि आते है। बुनियादी ज़रूरतों से वंचित गरीब लोग ज़रूरतमंद हो सकते है।

(8) उस बीस ड़ॉलर अब किसके पास है?

आज भी वह बीक ड़ॉलर अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रही हैं।

(9) अमेरिका के प्रसिडेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के बारे में एक सुंदर बात सुनी जाती है। क्या है?

अमेरिका के प्रसिडेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के पास मदद माँगने केलिए आए गरीब विद्यार्थी आए तो उन्होंने 20 ड़ॉलर दिए। वह तो उस छोटी रकम देकर भूल गए। जब विद्यार्थी रकम वापस लौटाने आए तो उन्होंने स्वीकार न किए। उसके पास रखकर ज़रुरतमंदों को देने को कहा। आज भी वह रकम अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रही है।

(10) खंड़ का संक्षेपण करें और उचित शीर्षक दें।

**<u>ज़रूरतमंदों के हाथों में</u>**

अमेरिका के प्रसिडेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के पास मदद माँगने केलिए आए गरीब विद्यार्थी आए। उसको उन्होंने 20 ड़ॉलर दिए। वह तो उस छोटी रकम देकर भूल गए। जब विद्यार्थी रकम वापस लौटाने आए तो उन्होंने स्वीकार न किए। उसके पास रखकर ज़रुरतमंदों को देने को कहा। आज भी वह रकम अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रही है।

## (6) रुपया कमाना ............... हुआ तो फिर कहिए।

(1) दुनिया के दुःख कैसे हल्का कर सकते हैं?

आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरकर इस दुनिया के दुःख को हल्का कर सकते हैं।

(2) आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरने से क्या-क्या फ़ायदा है?

आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरकर हंम इस दुनिया के दुःख को हल्का कर सकते हैं और हम से संबंधित लोगों के जीवन में कुछ-न-कुछ प्रसन्नता ज़रूर ही ला सकते हैं।

(3) हमरा जीवन किन-किन मुसीबतों से भरा पड़ा है?

हमारा जीवन लड़ाई, गरीबी, महँगाई, गुलामी जैसे मुसीबतों से भरा है।

(4) जिंदगी की लड़ाई को सहने लायक और जीवन को जीने लायक कैसे बना सकते हैं?

जीवन की मुसीबतों में कुछ सुख और आह्लाद फैलाकर ज़िंदगी की लड़ाई को सहने लायक और जीवन को जीने लायक कैसे बना सकते हैं।

(5) जीवन की मुसीबतों में कुछ सुख और आह्लाद फैलाने से क्या हो सकते हैं?
ज़िंदगी की लड़ाई को सहने लायक और जीवन को जीने लायक बना सकते है।

HSSLiVE.IN

(6) खंड का संक्षेपण करें और शीर्षक दें।

**<u>खुशी भरे जीवन</u>**

हम चाहे तो आनंद और सुख की रश्मियाँ बिखेरकर दुनिया के दु:ख को कुछ हल्का कर सकते हैं। जीवन की मुसीबतों में भी सुख और आह्लाद फैला सकते हैं और ज़िंदगी जीने लायक बना सकते हैं।

## (7) अपने काम से ............. कुछ नहीं।

(1) टिकट लाने केलिए छीना-झपटी होती थी, क्यों?
लड़ाई के कारण कंपनी ने गाड़ियों की संख्या कम कर दी थी। भीड़ खूब रहती थी। इसलिए टिकट लाने केलिए छीना-झपटी होती थी।

(2) टिकट बाबू के परेशानी का कारण क्या थी?
लड़ाई के कारण गाडियों की संख्या कम कर दी है। इसलिए टिकट लेने केलिए लोगों की अधिक भीड थी। टिकट काउडर की छोटी खिड़की से बहुत सारे हाथ अंदर घुस रहे थे। अनेक लोग एक साथ टिकट माँगना, यात्रियों की शिकायत भरी वाणी, उपहास, अपने काम की तनाव, टिकट का छीना-झपटी आदि देखने-सुनने के कारण टिकट बाबू परेशान थी।

(3) तानाकशी शुरु हुई, क्यों?
टिकट बाबू जल्दी-जल्दी एक-एक आदमी को टिकट देते रहते थे। इतने में गाड़ी आने का वक्त हो रहा था। लोगों का छूटने लगा और तानाकशी शुरु हुई।

(4) तानेकशी शुरु हुई, वहाँ क्या-क्या सुनाए जा रहे थे?
वहाँ बहुत सारे शब्द सुनाए जा रहे थे। "अरे भैया, दक्षिणा चढ़ाओ तब टिकट मिलेगा।"
"बड़ी इनएफीशियनसी है।"
"हम स्टेशन मास्टर से शिकायत करें।"

(5) इन तानेकशी के बीच भी टिकट बाबू क्या कर रहे थे?
टिकट बाबू इन तानाकशी को सुना-अनसुना करके अपना काम करते रहते थे।

(6) टिकट बाबू किन बातों को सुना-अनसुना करके अपने काम कर रहे थे?
टिकट केलिए छीना-झपटा करनेवालों की तानेकशी एवं धमकियों को सुना-अनसुना करके अपने काम कर रहे थे।

HSSLiVE.IN

(7) कभी-कभी नाराज़ हो जाते तो, टिकट बाबू अपनी नाराज़ी कैसे प्रकट करती हैं?

वह अपनी नाराज़ी, जो ताने कश रहे थे, उन्हें देर से टिकट देते रहा।

(8) लेखक ने मुसाफिरों से क्या कहा?

लेखक ने मुसाफिरों से कहा, "ज़रा ठहरिए, भाई साहब! देखिए बेचारा बाबू कितना फँस रहा है। इस लड़ाई ने रेलवे कर्मचारियों पर तो बेहद काम का बोझ डाल दिया है, जिसमें छोटे-छोटे क्लर्कों का तो मरण है।"

(9) टिकट बाबू पर इन शब्दों का अजीब असर पड़ॉ, किन की शब्दों का? क्यों?

लेखक की शब्दों का क्योंकि टिकट बाबू अपने सामने घटित बातों का सुना-अनसुना करके अपना काम करते रहते थे। यदि नाराज़ हो जाते तो, वह देर से टिकट देकर अपनी नाराज़ी को दूर करते रहे। ये सब देखकर लेखक के मन में सहानुभूति उभर उठा। लेखक लोगों को शांत करने केलिए और टिकट बाबू की परेशानी को दूर करने केलिए कही गई मधुर बातों का गहरा प्रभाव टिकट बाबू पर पडा। उसने जल्दी-जल्दी टिकट देना शुरु किया।

(10) टिकट बाबू की शिकायत क्या थी?

टिकट बाबू की शिकायत है, "ऐसी पिसाई हो रहा है कि हिसाब नहीं। कंपनी से स्टाफ की संख्या बढ़ाने केलिए कहा तो 'न' में जवाब मिला। महँगाई-भत्ते केलिए दरखास्त दी तो कहते हैं-विचार करेंगे।

(11) टिकट बाबू की मुसीबत क्या-क्या थी?

लड़ाई के कारण गाड़ियों की संख्या कम थी। गाड़ियों की कमी और लोगों के भीड़ के कारण पिसाई भी अधिक थी। महँगाई-भत्ता भी कम था।

HSSLiVE.IN

(12) टिकट बाबू को नई ताकत कैसे मिली?

काम की तनाव भरे घंटों में लेखक की मधुर बात और व्यवहार टिकट बाबू पर नया प्रभाव पडा। लेखक उसे खुश करने केलिए नहीं कहे गए थे। सच्चे ह्रदय से निकले सच्चे शब्दों को टिकट बाबू ने पहचान लिया। सहानुभूति के उन थोडे शब्दों ने उसे नई ताकत दी।

(13) छोटी-सी घटना है, लेकिन एक सबक सिखाती है। घटना का वर्णन अपने शब्दों में करें।

लड़ाई के कारण गाड़ियाँ कम थी। टिकट लाने केलिए भीड़ तो ज़्यादा अधिक था। इसलिए टिकट बाबू परेशान थी। टिकट बाबू की परेशानी समझकर लेखक ने सहानुभूति दर्शाई तो उस टिकट बाबू उत्साह से खटाखट टिकट काटकर भीड़ छाँटना शुरु कर दिया।

(14) छोटी-सी घटना है, लेकिन एक सबक सिखाती है। सबक क्या है?

बेचारे टिकट बाबू की परेशानी देखकर लेखक ने सहानुभूति दर्शाई। सहानुभूति के उन थोड़े शब्दों ने उसे नई ताकत थी। उसका ह्रदय मोम-सा हो गया और जल्दी-जल्दी टिकट देकर भीड़ छाँटना शुरु किया।

यह घटना हमें सहानुभूति सिखाते है, सहजीवियों से सहानुभूति दर्शाना मनुष्य सहज है।

(15) टिकट बाबू का ह्रदय मोम-सा हो गया। कैसे?

ज़्याद अधिक भीड़ और काम की पिसाई के कारण टिकट बाबू बहुत परेशान थी। उनकी परेशानी समझकर लेखक ने सहानुभूति दर्शाई।

सहानुभूति भरे उन थोड़े शब्दों ने उसे नई ताकत थी और उसका हृदय मोम-सा हो गया।

(16) घटना का संक्षेपण करें और उचित शीर्षक दें।

**सहानुभूति की ताकत**

लेखक मुंबई जा रहा था। लड़ाई के कारण गाड़ियाँ की संख्या बहुत कम थी, और भीड़ ज्यादा अधिक। वे ताने कश रहे थे। टिकट बाबू तो सुना-अनसुना करके अपना काम कर रहे थे। लेखक ने भीड़ को शांत कराने की कोशिश की। लेखक की सहानुभूति भरे शब्दों का अजीब असर बेचारे टिकट बाबू पर पड़ा। वह उत्साह के साथ जल्दी-जल्दी टिकट काटकर भीड़ छाँटना शुरु कर दिया। सहानुभूति के उन शब्दों ने उन्हे नई ताकत दी।

(8) **एक बार मैं ............ सुख तो पहुँच सका।**

(1) लेखक ने बैंक में क्या देखा?

लेखक ने देखा कि बैंक के क्लर्क का अक्षर दरअसल सुंदर है।

(2) लेखक ने क्लर्क से क्या कहा?

लेखक ने क्लर्क से कहा, "ज़रा पास बुक दिखाए तो, आपकी लिपि बहुत सुंदर दिखती है।" और उसने पासबुक नज़दीक से देखकर यह भी कहा, "ब्यूटीफुल"।

(3) क्लर्क का चेहरा क्यों प्रसन्नता से खिल उठा?

बैंक के रूखे आँकड़ों से माथापच्ची करते-करते उसका दिन बीतता है। काम के नीरस घंटों में उसे आनंद का अनुभव नहीं हुआ था। इसलिए लेखक के मन से आई शब्द सुनकर क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।

(4) क्लर्क का दिन कैसे बीतता है?

बैंक के रूखे आँकड़ों में माथापच्ची करते-करते क्लर्क का दिन बीतता है।

(5) लेखक को क्यों प्रसन्नता महसूस हुई?

बैंक के क्लर्क का दिन आँकडों के बीच व्यस्त है। काम के नीरस घंटों में उसे आनंद का अनुभव नहीं हुआ होगा। लेखक के एक शब्द उसे खुशी के शिखर तक पहुँचानेवाले है। लेखक को भी बडी प्रसन्नता महसूस हुई कि उन थोडे शब्दों से उस क्लर्क के जीवन में थोडा आनंद पहुचा सका।

(6) घटना का सारांश लिखें और शीर्षक दें।

**आनंद का अनुभव**

लेखक बैंक में अपना हिसाब खोलने केलिए गया। वहाँ उन्होंने देखा कि क्लर्क की लिपि बहुत सुंदर है। उन्होंने उसकी प्रशंसा की। क्लर्क का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। लेखक को भी बड़ी प्रसन्नता हुई कि उनके शब्दों ने उस क्लर्क के जीवन मे थोड़ी-सी सुख पहुँचा सका।

## अनुवर्ती कार्यः-

(9) संभ्रांत महिला रेलगाडी से कुछ चीज़ें बाहर फेंकती जा रही है। तब सहयात्री और संभ्रांत महिला के बीच का संभावित वार्तालाप तैयार करें।

सहयात्री : आप क्या कर रही है?
महिला : मैं इन चीज़ों को बाहर फेंक रहा हुं।
सहयात्री : क्या है, यह?
महिला : ये सुंदर फूल-फलों का बीज हैं।
सहयात्री : विचित्र है।
महिला : क्यों?
सहयात्री :इसका लक्ष्य क्या हैं?
महिला : यदि इसमें से एक-दो जड़ पकड़े तो ......
सहयात्री : तो! आप इधर से फिर आएगी?
महिला : संभावना नहीं।
सहयात्री : फिर आपको क्या फायदा है?
महिला : मुझे नहीं, कोई दूसरे इससे फायदा ज़रूर लेगा।
सहयात्री : आपकी दीर्घ-दृष्टि श्लाघनीय है।
महिला : धन्यवाद।
सहयात्री : ज़रूर आप इधर से आएँ और इन्हीं को फूलते-फलते देखे।
महिला : उस सुदिन की प्रतीक्षा में....
सहयात्री : हाँ, ईश्वर की कृपा से आज आपको मिलने का अवसर मिला।
महिला : दूसरों की भलाई करने का अवसर न छोडें। इसका फल ज़रूर हमें मिलेगा।
सहयात्री : जी हाँ।
महिला : ईश्वर आपकी कृपा करें।

HSSLiVE.IN

(10) मान लें, रेलगाड़ी से सफ़र करनेवाली वृद्ध संभ्रांत महिला की नज़र डिब्बे में चिपके हुए विज्ञापन पर पड़ती है जो रक्तदान के महत्व को रेखांकित करता है। संकेतों के वह विज्ञापन तैयार करें।

- समभाव – सहिष्णुता - मानव-प्रेम - जीवनदान

**रक्तदान जीवनदान**

**रक्तदान है जीवन पूजा**
**इससे जैसा**
**न कोई दान है दूजा**

एक बूँद रक्त से, बचेगा कई अमूल्य जीवन

रक्तदान केलिए हाथ जोड़ो ——

HSSLiVE.IN

(11) 'आज भी वह रकम अमेरिका में ज़रूरतमंदों के हाथों में घूम रहे है'- मान लें, वह रकम अपने वर्तमान अनुभवों का आत्मकथा के रूप में जिक्र करती है। वह आत्मकथांश लिखें।

- समाज की पूँजी अमीरों के हाथ में।
- पूँजी का समुचित वितरण से समाज का संतुलन।
- ज़रुरतमंद के हाथों में पूँजी का सौगुना मूल्य।

HSSLiVE.IN **<u>मैं, वही रकम</u>**

किसी को मुझे मालुम है? जी हाँ! मैं रकम हुं। मेरा जन्म अमेरिका में हुआ है। वही रकम, जिसे अमेरिका के प्रसिडेंट ने एक गरीब विद्यार्थी को दिया है। वहाँ से मेरी यात्रा शुरु होती है।

मैं अमेरिका के प्रसिडेंट बेंजमिन फ्रैंकलीन के यहाँ रहती थी। एक दिन एक गरीब विद्यार्थी कुछ मदद माँग कर आया। प्रेसिडेंट तो दयालु था। उन्होंने मुझे उसको दिया। उसकी सहायता करके मेरा कई दिन बीत गया। पढ़ा-लिखाकर अच्छे काम मिलने पर वह मुझे वापस लौटने केलिए गया था। लेकिन प्रसिडेंट मुझे स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि यदि आपके पास कोई ज़रूरतमंद आए तो उसे यह दीजिए। और फिर मैं उसके पास।

मेरा जीवन उसी तरह आगे चला। एक दिन एक बूढ़ा आकर अपने बेटे की चिकित्सा की मदद माँगकर वहाँ आया। मैं ने एक आस्पताल देखा। वहाँ कितने रोगी, कितने नए-नए रोग? मेरा मन द्रवित हो गया। कुछ साल बाद एक छोटी लडकी की पढ़ाई केलिए मैं फिर एक विद्यालय में। वहाँ छोटे बच्चे और पुस्तकों के बीच.... हाँ, जीवन का जितना सुंदर समय है.....वह लडकी आज एक इंजिनीयर है। वहाँ से अनाथ बच्चों के एक आश्रम में।

आज की स्वार्थता भरी दुनिया में मनुष्य का लक्ष्य केवल धनोपार्जन तक सीमित रहा है। ऐसे लोगों के साथ रहना मैं नहीं चाहता। दुनिया में बुनियादी ज़रूरतों से वंचित अनेक लोग है। उनके पास रहने पर मेरा मूल्य सौगुना बढ़ेगा। अमीर लोग मुझे दुरुपयोग करेगा।

अब मैं बहुत खुश हुं। अनेक गरीब लोगों की सहायता करना, इससे बढ़कर कोई अन्य भाग्य नहीं है। कोई एक ज़रूरतमंद आए तो मैं ज़रूर यहाँ से जाऊँ। ऐसी प्रतीक्षा में..............

**<u>परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर लिखने का प्रयास करें</u>:-**

(1) बूढ़ा आदमी और नौजवान के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(2) आम की गुठलियाँ बोने के बाद घर जाकर वह अपना डायरी लिखता है, जिसमें उस नौज वान के बारे में भी लिखा होगा। डायरी का पन्ना कल्पना करके लिखे।

(3) बूढ़े आदमी से मिलने के बाद घर जाकर नौजवान अपने उस दिन की डायरी में इस घटना का भी जिक्र करते हैं। डायरी का पन्ना कल्पना करके लिखें।

(4) बूढ़ा आदमी से मिलने की बाद घर जाकर नौजवान पत्नी से उसके बारे में कहते है। वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(5) बूढा आदमी से बोया हुआ गुठलियों में से एक अब बड़े होकर यात्रियों को छाया, मीठे फल तथा अनेक पक्षियों के आवाज़ स्थान देनेवाले बड़ा वृक्ष बना। वह वृक्ष अब अपनी आत्मकथा लिखने की कोशिश करते है। वृक्ष की सहायता करें।

HSSLiVE.IN

(6) मान ले, आप रेलगाडी में यात्रा कर रहे है। बीच में आपने देखा कि एक वृद्ध महिला ने बीच-बीच में कुछ चीज़ें बाहर फेंकते रहते हैं। पूछने पर उत्तर मिला कि "ये सुंदर फूल-फलों के बीज है।" फिर आप दोनों वन-संरक्षण के बारे में बताया। वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(7) संभ्रांत महिला से मिलने के बाद घर जाकर लेखक अपनी डायरी लिखते है। डायरी कल पना करके लिखें।

(8) अमेरिका के प्रसिड़ेट बेंजामिन फ्रैंकालिन से कुछ मदद माँगने केलिए आए गरीब विद्यार्थी को उसने बीस डॉलर दिया। प्रेसिडेंट यह बात अपने निजी सहायक से बताते है। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(9) अमेरिका के प्रेसिडेंट से बीस डॉलर की सहायता मिलने के बाद घर जाकर वह विद्यार्थी अ पने माँ से उस घटना के बारे में कहते हैं। उन दोनों के बीच का वार्तालाप लिखें।

(10) विद्यार्थी अपने उस दिन की डायरी में उस बड़ी मदद के बारें में भी जिक्र करते हैं। डायरा का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।

(11) अमेरिका के प्रसिडेंट से अपने मुलाकात के बारे में उस विद्यार्थी अपने मित्र को पत्र लिखते है। वह पत्र लिखें।

(12) अपने पास सहायता माँगी आए विद्यार्थी को अमेरिका के प्रसिडेंट ने बीस डॉलर दिए। लेकिन उस छोटी रकम के बारे में वह भूल गया। एक दिन विद्यार्थी उसे वापस देने केलिए आता है। उन दानों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(13) प्रसिड़ेंट ने विद्यार्थी से डॉलर अपने पास रखकर ज़रूरतमंदों को देने को कहा। मान लें, आप उस विद्यार्थी है, और आपके पास एक ज़रूरतमंद आते है। दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(14) उस विद्यार्थी अब एक प्रिंसिपल है। अपने आत्मकथा लिखते वक्त उस छोटी उम्र में मिली रकम की याद करती है। वह आत्मकथांश लिखें।

(15) एक दिन अमेरिका के पूर्व प्रसिडेंट बेंजामिन फ्रैकालिन की मृत्यु की खबर समाचार पत्र में देखकर वह उदासीन होती है। वह अपनी पत्नी से उस पुरानी घटना के बारे में कहते हैं। वार्तालाप तैयार करें।

(16) टिकट बाबु परेशानी से टिकट बनाते जाते थे। लेकिन उस छोटी खिड़की से न जाने कितने-कितने हाथ घुस रहे थे और न जाने कितनी आवाज़ें आ रही है। टिकट बाबू के उस दिन की डायरी कल्पना करके लिखें।

(17) घर जाकर टिकट बाबू उस दिन की परेशानी के बारे में अपनी पत्नी से कहते है। संभावित वार्तालाप लिखें।

टिकट बाबू — शोभा, एक गिलास पानी लाओ।
शोभा — (पानी देते हुए) आप क्यों इतनी परेशान है?

..............................................................................

(18) एक ग्राहक ने टिकट बाबू की इनएफीशियेंसी के बारे में स्टेशन मास्टर से शिकायत किया। इस विषय में टिकट बाबू और स्टेशन मास्टर के बीच का वार्तालाप लिखें।

स्टेशन मास्टर — अरे, एक शिकायत मिला है।
टिकट बाबू — शिकायत, कौन दिए है?

.....................................................................

HSSLiVE.IN

(19) लेखक और टिकट बाबू के बीच में हुई वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(20) टिकट बाबू के परेशानी, लेखक अपने डायरी में जिक्र करता है। वह पन्ना लिखें।
(21) रिटायर्ड होकर टिकट बाबू अपने आत्मकथा लिखने की तैयारी में है। उसके मन में फिर एक बार उस पुरानी घटना की यादें आती है। टिकट काउंडर में संभावित घटना टिकट बाबू के आत्मकथांश के रूप में लिखें।
(22) “एक बार मैं बैंक में अपना हिसाब खोलने केलिए गया। क्लर्क मुझसे सवाल पूछता जाता था और पास बुक में दर्ज करता जाता था।” लेखक और क्लर्क के बीच का संभावित वार्तालाप लिखें।

क्लर्क आपका नाम क्या हैं?
मैं अनंत गोपाल शेवड़े।

HSSLiVE.IN

........................................................

(23) “मैं ने देखा, उसके अक्षर दरअसल बहुत अच्छे हैं।”इसके बाद के लेखक और क्लर्क क्या बताया होगा? कल्पना करके लिखें।

मैं ज़रा पास बुक दीजिए।
क्लर्क क्यों?

...........................................................

(24) मैं ने कुछ मन ही मन और ज़ोर से कहा, “ब्यूटिफुल”! उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। इस घटना को सूचित करते हुअ क्लर्क अपने मित्र को पत्र लिखते है। पत्र कल्पना करके लिखें।
(25) वर्षों बाद क्लर्क अपनी आत्मकथा लिखते है। जिसमें बैंक की घटना का भी जिक्र करते हैं। वह आत्मकथांश लिखें।
(26) “आनंद की फुलझड़ियाँ ” में वर्णित घटनाओं में आपको किस घटना बहुत पसंद हुई, क्यों?
(27) आप अपने पढ़ाई और पुस्तकों के बीच लड़ते-लड़ते दिन बिताते थे। ऐसे नीरस घंटों में शायद इस तरह के आनंद का अनुभव हुआ होगा। ऐसे एक अनुभव का वर्णन करें।
(28) “आनंद की फुलझड़ियाँ ” हमें क्या संदेश देता हैं?

*********************

HSSLiVE.IN